संकलित्र । 165/170

ईसवी सन् की निम्नांकित तिथियाँ :

58-57 ई० पू० — विक्रम संवत
78 : शक संवत प्रारंभ
80-115 : द पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी
150 : टालमी की ज्योग्राफी
319 : गुप्त संवत प्रारंभ
400 : महाभारत, रामायण और प्रमुख पुराणों का अंतिम रूप से संकलन
चौथी शताब्दी : मध्य एशिया में प्राचीनतम भारतीय पांडुलिपि प्राप्त
पाँचवी शताब्दी : फा-हियान का भारत में आगमन
छठी शताब्दी : वलभी में प्राकृत जैन धर्मग्रंथ अंतिम रूप से संकलित
सातवीं शताब्दी : ह्वेन सांग का भारत में आगमन ।
बाणभट्ट कृत हर्षचरित ।
ग्यारहवीं शताब्दी : अतुल कृत मूषिकवंश ।
ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी : बिल्हण कृत विक्रमांकदेवचरित
बारहवीं शताब्दी : संध्याकर नंदी कृत रामचरित । कल्हण कृत राजतरंगिणी ।
1837 : जेम्स प्रिंसेप अशोक का अभिलेख पढ़ने में सफल हुआ ।

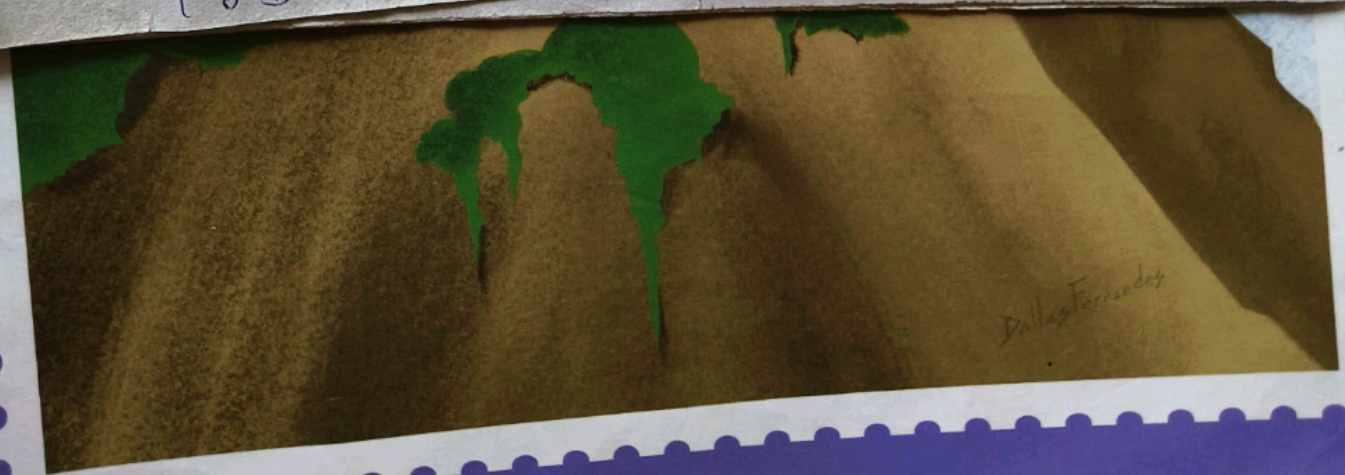

Ancient History

1. स्रोतों के प्रकार और इतिहास का निर्माण

1/04/2022

⇒ प्राचीन भारत के निवासियों ने अपने पीछे अनगिनत भौतिक अवशेष छोड़ रखे हैं। चाहे वो दक्षिण भारत में पत्थर के मंदिर हो या पूर्वी भारत में ईंटों के विहार, आज भी धरातल पर देखने को मिलते हैं। ये सारे भवनों के अवशेष अनेकानेक टीलों के नीचे दबे पड़े हैं।

⇒ टीला – टीला धरती की सतह के उस उभरे हुए भाग को कहते हैं जिसके नीचे अनेकानेक अवशेष दबे पड़े हैं।
ये कई प्रकार के हो सकते हैं। जैसे –
एकल संस्कृतिक, मुख्य संस्कृतिक और बहु संस्कृतिक।

⇒ एकल संस्कृतिक टीलों में सर्वत्र एक संस्कृति की प्रधानता होती है।

⇒ मुख्य संस्कृतिक टीलों में एक संस्कृति प्रधान रहती है और अन्य संस्कृतियां जो पूर्वकाल की भी हो सकती हैं या उत्तर काल की विशेष महत्व की नहीं होतीं।

⇒ बहु संस्कृतिक टीलों में उत्तरोत्तर अनेक संस्कृतियों की प्रधानता रहती है।

⇒ टीले की खुदाई दो प्रकार से की जा सकती है –
(1) अनुलम्ब उत्खनन या अर्ध्वाधर उत्खनन या लम्बवत् उत्खनन
(2) क्षैतिज उत्खनन

⇒ अनुलम्ब उत्खनन का तात्पर्य सीधी खड़ी लम्बवत् खुदाई करना है जिससे विभिन्न संस्कृतियों का कालक्रमिक तांता उद्घाटित हो सके।

⇒ अधिकांश स्थलों की अनुलम्ब खुदाई की गयी है।

⇒ क्षैतिज उत्खनन का तात्पर्य है सारे टीले की या उसके वृहत भाग की खुदाई।

ये खर्चीली होने के कारण कम की गयी है। इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग तक्षशिला की खुदाई में हुआ था। तदन्तर, कालीबंगा, लोथल, मोहनजोदड़ो आदि स्थलों के उत्खनन में भी इस तकनीक का प्रयोग किया गया था।

क्षैतिज उत्खनन के बिना किसी संस्कृति या सभ्यता के पूर्ण विस्तार का ज्ञान नहीं हो पाता है।

तक्षशिला की खुदाई से भारतीय यवन शासकों की संस्कृति का ज्ञान प्राप्त हुआ था।

⇒ अनुलम्ब उत्खनन गाड़ी के बिना ही रेल समय-सारिणी है जबकि क्षैतिज उत्खनन समय सारिणी के बिना ही रेलगाड़ी है। — पुरातत्वविद् व्हीलर

⇒ अनुलम्ब या लम्बवत उत्खनन को व्हीलर ने काल मापन या संस्कृति मापन की संज्ञा प्रदान की है क्योंकि इस प्रणाली में समय की बचत होती है और व्यय भी सीमित होता है इसमें श्रम भी कम लगता है।

⇒ उत्खनन (Excavation) :—

उत्खनन या खुदाई का विशेष महत्व है क्योंकि इसके द्वारा ही हम भूगर्भ में छिपी पुरा वस्तुओं को प्रकाश में ला पाते हैं।

⇒ उत्खनन से पता चलता है कि उस समय के लोग जिन बस्तियों में रहते थे उनका ढाँचा कैसा था, वे किस प्रकार के मृद्भाड उपयोग में लाते थे, किस प्रकार के घरों में रहते थे और भोजन में किन अनाजों का इस्तेमाल करते थे और कैसे औजारों या हथियारों का प्रयोग करते थे।

⇒ महापाषाण (मेगालिथ):—
दक्षिण भारत के कुछ लोग मृत व्यक्तियों के शव के साथ औजार, हथियार, मिट्टी के बर्तन आदि चीजें भी कब्र में गाड़ते थे और उनके ऊपर एक घेरे में बड़े-2 पत्थर खड़े कर दिए जाते थे।
ऐसे स्मारकों को महापाषाण या मेगालिथ कहते हैं।

⇒ पुरातत्व (Archeology):—
जिस विज्ञान के आधार पर पुराने टीलों का क्रमिक स्तरों में विधिवत उत्खनन किया जाता है और प्राचीन काल के लोगों के भौतिक जीवन के बारे में जानकारी मिलती है, उसे पुरातत्व (Archeology) कहते हैं।

⇒ रेडियोकार्बन (C^{14}) पद्धति:—
रेडियोकार्बन या कार्बन-14, कार्बन का रेडियोधर्मी समस्थानिक (Isotope) है जो सभी जीवित वस्तुओं में विद्यमान रहता है।
किसी वस्तु में विद्यमान C^{14} का पता लगाकर उस वस्तु के समय का निर्धारण किया जा सकता है।
सभी रेडियोधर्मी पदार्थों की तरह इसका

निश्चित / समान गति से क्षय होता है।

जब कोई वस्तु जीवित रहती है तो C^{14} के क्षय की प्रक्रिया के साथ हवा और भोजन की शृंखला से उस वस्तु में C^{14} का समन्वय भी होता रहता है परंतु जब वस्तु निष्प्राण हो जाती है तब इसमें विद्यमान C^{14} के क्षय की प्रक्रिया समान गति से जारी रहती है लेकिन यह हवा और भोजन से C^{14} लेना बंद कर देती है।

⇒ C^{14} का आधा जीवन 5568 वर्षों का होता है।

रेडियोधर्मी पदार्थों का आधा जीवन वह काल / समय होता है जिसमें उस वस्तु की आदी रेडियोधर्मी धारिता नष्ट हो जाती है।

इस प्रकार यदि कोई वस्तु 5568 वर्षों पहले निष्प्राण हो गई तो उसकी C^{14} धारिता उस समय की तुलना में आधी रह जाएगी जब वह जीवित थी और अगर वह 11,136 वर्षों पहले निष्प्राण हुई तो उसके C^{14} की धारिता उस समय की तुलना में चौथाई रह जाएगी जब वह जीवित थी।

⇒ पौधों के अवशेषों का परीक्षण कर विशेषत: पराग के विश्लेषण द्वारा जलवायु और वनस्पति का इतिहास बनता है।

इसी आधार पर यह कहा जाता है कि राजस्थान और कश्मीर में वृष्टि का प्रचलन लगभग 7000-6000 ई० में भी था।

⇒ मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स) :—

सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र या न्यूमिस्मेटिक्स कहते हैं।

⇒ पुराने सिक्के तांबे, चाँदी, सोने और सीसे के बनते थे।

⇒ हिन्द यवन शासकों के इतिहास का पता उनके सिक्कों के आधार पर पता चला।

⇒ सिक्कों का काम दान-दक्षिणा, खरीद-बिक्री और वेतन-मजदूरी के भुगतान में पड़ता था, इसलिए सिक्कों से आर्थिक इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

⇒ सबसे अधिक सिक्के मौर्योत्तर कालों में मिले हैं जो विशेषत: सीसे, पोटिन, तांबे, कांसे, चांदी और सोने के हैं।

⇒ गुप्त शासकों ने सोने के सिक्के सबसे अधिक जारी किए। इन सबसे पता चलता है कि व्यापार-वाणिज्य मौर्योत्तर काल में और गुप्तकाल के अधिक भाग में, खूब बढ़ा।

इसके विपरीत गुप्तोत्तर काल के बहुत कम सिक्के मिले हैं जिससे पता चलता है कि उस समय व्यापार-वाणिज्य क्षिति हो गया था।

⇒ सिक्कों पर राजवंशों व देवताओं के चित्र, धार्मिक प्रतीक और लेख भी अंकित रहे हैं, जिनसे तत्कालीन कला और धर्म पर प्रकाश पड़ता है।

⇒ अभिलेख प्रस्तर स्तंभों और दीवारों पर खुदे रहते हैं ये सिक्कों से भी कहीं अधिक महत्व के हैं।

अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र एपिग्राफी (एपिग्राफी) कहते हैं।

अभिलेखों तथा दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन लिपि के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र (पैलिअॅग्रेफी) कहते हैं।

अभिलेख मुहरों, स्तूपों, चट्टानों और ताम्रपत्रों पर भी मिलते हैं तथा मंदिर की दीवारों और ईंटों या मूर्तियों पर भी।

⇒ आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं और ये ईसा पूर्व तीसरी सदी के हैं।

⇒ मौर्य, मौर्योत्तर तथा गुप्तकाल के अधिकांश अभिलेख कार्पस इन्सक्रिप्शनम इंडिकरम नामक ग्रंथमाला में संकलित करके प्रकाशित किए गए हैं।

⇒ हड़प्पा संस्कृति के अभिलेख अभी तक पढ़े नहीं जा सके हैं। ये संभवतः ऐसी किसी भावचित्रात्मक लिपि में लिखे गए हैं जिसमें विचारों और वस्तुओं को चित्रों के रूप में व्यक्त किया जाता था।

⇒ अशोक के शिलालेख ब्राह्मी लिपि में हैं। यह लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी।

⇒ पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में अशोक के शिलालेखों में

यूनानी और अरामाइक लिपियों का प्रयोग हुआ है।

⇒ अशोक के कुछ शिलालेख खरोष्ठी लिपि में भी हैं जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।

⇒ गुप्तकाल के अंत तक देश की प्रमुख लिपि ब्राह्मी ही रही। पश्चिमोत्तर भाग के अलावा भारत के भिन्न प्रदेशों में ब्राह्मी लिपि का ही प्रचार रहा।

⇒ सबसे पुराने अभिलेख हड़प्पा संस्कृति की मुहरों पर मिलते हैं ये लगभग 3500 ई॰ पू॰ के हैं। इनको पढ़ना अब तक संभव नहीं हो सका है।

⇒ देश के सबसे पुराने अभिलेख जो पढ़े जा चुके हैं वे ईसा-पूर्व तीसरी सदी के अशोक के शिलालेख हैं।
14 वीं सदी में फिरोजशाह तुगलक को अशोक के 2 स्तंभ लेख मिले थे, एक मेरठ में और दूसरा हरियाणा के टोपरा नामक स्थान में, उसने इन्हें दिल्ली मंगवाया और अपने राज्य के पंडितों से पढ़वाने का प्रयास किया पर कोई पढ़ नहीं पाया। 18 वीं सदी के अंतिम दशक में अंग्रेजों को भी इन्हें पढ़ने में कठिनाई हुई।

इन अभिलेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम 1837 ई॰ में कलकत्ता मिंट के जेम्स प्रिंसेप को जो उस समय बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में ऊँचे पद पर थे।

⇒ अभिलेखों के अनेक प्रकार हैं —

(1) कुछ अभिलेखों में अधिकारियों और जनता के लिए जारी किए गए सामाजिक, धार्मिक तथा प्रशासनिक राज्यादेशों और निर्णयों की सूचनाएँ रहती हैं।
इसका उदाहरण अशोक के शिलालेख हैं।

(2) दूसरी कोटि में वे आनुष्ठानिक अभिलेख आते हैं जिन्हें बौद्ध, जैन, वैष्णव, शैव आदि संप्रदायों के अनुयायियों ने भक्तिभाव से स्थापित स्तंभों, प्रस्तरफलकों, मंदिरों और प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण कराया है।

(3) तीसरी कोटि में वे प्रशस्तियाँ आती हैं जिसमें राजाओं और विजेताओं के गुणों और कीर्तियों का बखान तो है पर उनकी कमजोरियों और पराजयों का कोई जिक्र नहीं है।
इसका उदाहरण समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति है।

⇒ यद्यपि प्राचीन भारत के लोगों को लिपि का ज्ञान 2500 ई॰पू॰ में भी था, परंतु हमारी प्राचीनतम उपलब्ध पांडुलिपियाँ ईसा की चौथी सदी के पहले की नहीं हैं और ये भी मध्य एशिया से प्राप्त हुई हैं।

⇒ भारत में पांडुलिपियाँ भोजपत्रों और तालपत्रों पर लिखी गयी हैं, परंतु मध्य एशिया में जहाँ भारत से प्राकृत भाषा फैल गयी थी ये पांडुलिपियाँ भेड़चर्म तथा काष्ठफलकों पर भी लिखी गई हैं।

⇒ हिंदुओं के धार्मिक साहित्य में वेद, रामायण, महाभारत, पुराण आते हैं।

⇒ ऋग्वेद को 1500 - 1000 ई॰ पू॰ के लगभग का मान सकते हैं। लेकिन अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्राह्मणों तथा आरण्यकों और उपनिषदों को 1000 - 500 ई॰ पू॰ के लगभग का माना जाएगा।

⇒ वेदांग :- वैदिक मूलग्रंथ का अर्थ समझ में आए इसके लिए वेदांगों अर्थात् वेद के अंगभूत शास्त्रों का अध्ययन आवश्यक था।

ये वेदांग हैं —

(1) शिक्षा (उच्चारण-विधि) (4) निरुक्त (भाषा विज्ञान)
(2) कल्प (कर्मकांड) (5) छंद
(3) व्याकरण (6) ज्योतिष

⇒ सूत्र :- संक्षिप्त नियम को सूत्र कहते हैं।

सूत्र लेखन का सबसे विख्यात उदाहरण है - पाणिनी का व्याकरण जो 450 ई॰ पू॰ के आसपास लिखा गया था।

पाणिनी के व्याकरण में समाज अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर भी प्रकाश डाला गया है। यह 450 ई॰ पू॰ के आसपास लिखा गया है।

⇒ महाभारत, वेदव्यास की कृति है। पहले इसमें केवल 8800 श्लोक थे और इसका नाम जयस अर्थात् जय संहिता था। जिसका अर्थ होता है विजय संबंधी संग्रह ग्रंथ।

बाद में यह बढ़कर 24,000 श्लोक का हो गया और भारत नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसमें प्राचीनतम वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा है।

अंततः इसमें 1 लाख श्लोक हो गए और तद्नुसार यह शतसाहस्री संहिता या महाभारत कहलाने लगा।

इसमें कथोपकथाएँ हैं, वर्णन है और उपदेश भी इसकी मूल कथा, जो कौरवों और पांडवों के युद्ध की है उसे वैदिक काल की भी हो सकती है।

⇒ वाल्मीकि रामायण में प्रथमतः 6000 श्लोक थे, जो बढ़कर 12,000 श्लोक हो गए और अंततः 24,000 श्लोक।

⇒ रामायण की रचना महाभारत के बाद हुई प्रतीत होती है।
महाभारत > रामायण > कर्मकांड साहित्य

⇒ श्रौतसूत्र :— राजाओं के द्वारा और तीन उच्च वर्णों, धनाढ्य पुरुषों द्वारा अनुष्ठेय सार्वजनिक यज्ञों के विधि-विधान

⇒ जातकर्म (जन्मानुष्ठान), नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध आदि घरेलू या पारिवारिक अनुष्ठानों का विधि-विधान
— गृह्यसूत्र

⇒ श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र दोनों ईसा-पूर्व 600-300 के आसपास हैं।

⇒ शुल्वसूत्र :— यज्ञवेदी के निर्माण के लिए विविध प्रकार के मापों का विधान
* ज्यामिति और गणित का आरंभ यहीं से आरंभ होता है।

⇒ प्राचीनतम बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए थे। यह भाषा मगध यानी पश्चिम बिहार में बोली जाती थी।

⇒ बौद्धों के धार्मिकेतर साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण और रोचक हैं गौतम बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाएँ। पूर्वजन्मों की ये कथाएँ जातक कहलाती हैं। ऐसा विश्वास है कि गौतम के रूप में जन्म लेने से पहले बुद्ध 550 से भी अधिक पूर्वजन्मों से गुजरे हैं। इनमें से कई जन्मों में उन्होंने पशु के जीवन पाए थे। प्रत्येक कथा एक प्रकार की लोक कथा है।
ये जातक ईसा-पूर्व 5वीं सदी से दूसरी सदी ई० सन् तक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर बहुमूल्य प्रकाश डालते हैं। प्रसंगवश ये कथाएँ बुद्धकालीन राजनीतिक घटनाओं की भी जानकारी देती हैं।

⇒ जैन ग्रंथों की रचना प्राकृत भाषा में हुई थी। ईसा की 6ठी सदी में गुजरात के वल्लभी नगर में इन्हें अंतिम रूप से संकलित किया गया था।
इनके आधार पर हमें महावीरकालीन बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के राजनीतिक इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता मिली है।
जैन ग्रंथों में व्यापार व व्यापारियों के उल्लेख बार-बार मिलते हैं।

⇒ लौकिक साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। विधि-ग्रंथों को उसी कोटि में रखा जा सकता है।
इन ग्रंथों में धर्मसूत्र, स्मृतियाँ और टीकाएँ पड़ती हैं

नाइट्रेस का तेल - क
कलावा

और इन तीनों को मिलाकर धर्मशास्त्र कहा जाता है।
धर्मसूत्रों का संकलन 500 - 200 ई०पू० में हुआ था।

⇒ कौटिल्य का अर्थशास्त्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण विधिग्रंथ है। यह 15 अधिकरणों या खंडों में विभक्त है जिनमें दूसरा और तीसरा अधिक पुराने हैं।
यह ग्रंथ मौर्यकालीन समाज और अर्थतंत्र की झलक देते हैं। इसमें प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र तथा अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है।

⇒ कालिदास - अभिज्ञानशाकुंतलम् - नाटक

⇒ संगम - साहित्यिक सभा

⇒ कुछ प्राचीनतम तमिल ग्रंथ भी हैं जो संगम साहित्य में संकलित हैं। चूंकि राजाओं द्वारा संरक्षित विद्या केंद्रों में एकत्र होकर कवियों और भाटों ने तीन-चार सदियों में इस साहित्य का सृजन किया था। चूंकि ऐसी साहित्यिक सभा को संगम कहते थे, इसलिए समूचा साहित्य संगम साहित्य के नाम से प्रसिद्ध हो गया।
इन कृतियों का संकलन ईसा की आरंभिक 4 सदियों में हुआ, हालांकि इनका अंतिम संकलन छठी सदी में हुआ जान पड़ता है।

⇒ संगम साहित्य के पद्य 30,000 पंक्तियों में मिलते हैं, जो 8 एट्टत्तोके अर्थात् संकलनों में विभक्त हैं।

⇒ पद्य 100-100 के समूहों में संगृहीत हैं, जैसे - पुरनानूरू (बाहर के 4 शतक) आदि।

⇒ मुख्य समूह दो हैं: पटिनैडिकल पट्टिनेनकील कणक्कु (18 निम्न संग्रह) और पत्तपाट्टू (10 गीत)। पहला दूसरे से पुराना माना जाता है, इसलिए लौकिक इतिहास के लिए महत्वपूर्ण समझा जाता है।

⇒ संगम ग्रंथ वैदिक ग्रंथों से, खासकर ऋग्वेद से, भिन्न प्रकार के हैं। ये धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं। इनके मुक्तकों और प्रबंधकाव्यों की रचना बहुत सारे कवियों ने की है, जिसमें बहुत-से नायकों (वीरपुरुषों) और नायिकाओं का गुणगान है। इस प्रकार ये लौकिक कोटि के हैं। ये आदिमकालीन गीत नहीं हैं, बल्कि इनमें परिष्कृत साहित्य का दर्शन होता है।

⇒ संगम ग्रंथों में बहुत-से नगरों का उल्लेख मिलता है। इनमें उल्लिखित कावेरीपट्टनम का समृद्धिपूर्ण अस्तित्व पुरातात्विक साक्ष्य से समर्थित हुआ है। इनमें यह भी बताया गया है कि यवन लोग अपने-अपने पोतों पर आते, सोना देकर गोलमिर्च खरीदते और स्थानीय लोगों को सुरा और दासियाँ पहुँचाते थे।

यह व्याख्यान प्राचीन भारत के तिथिक्रम के लिए सुदृढ़ आधारशिला बन गई।

⇒ चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में दूत बनकर आए मेगास्थनीज की इंडिका उन उद्धरणों के रूप में ही सुरक्षित है जो अनेक ख्याति प्राप्त लेखकों की रचनाओं में आए हैं।

इन उद्धरणों को एक साथ मिलाकर पढ़ने पर न केवल मौर्य शासन व्यवस्था के बारे में ही बल्कि मौर्यकालीन सामाजिक वर्गों और आर्थिक क्रियाकलापों के बारे में भी मूल्यवान जानकारी मिलती है।

इंडिका अतिरंजित बातों से मुक्त नहीं है, पर ऐसी बातें तो अन्यान्य प्राचीन विवरणों में भी पाई जाती हैं।

⇒ ईसा की पहली और दूसरी सदियों के यूनानी और रोमन विवरणों में भारतीय बंदरगाहों के उल्लेख मिलते हैं, और भारत तथा रोमन साम्राज्य के बीच होने वाले व्यापार की वस्तुओं की भी चर्चा मिलती है।

⇒ यूनानी भाषा में लिखी गई 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' और 'टॉलमी की ज्योग्राफी' नामक पुस्तकों में भी प्राचीन भूगोल और वाणिज्य के अध्ययन के लिए प्रचुर महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है।

इनमें पहली पुस्तक 80 और 115 ई० के बीच किसी समय किसी अज्ञात लेखक ने लिखी, जिसने लाल सागर, फारस की खाड़ी और हिंद महासागर में होने वाले रोमन व्यापार का वृत्तांत दिया है।

दूसरी पुस्तक 150 ई० के आस-पास की मानी जाती है।

⇒ प्लिनी की नेचुरलिस हिस्टोरिका ईसा की पहली सदी की यह लैटिन भाषा में है और इसमें हमें भारत और इटली के बीच होने वाले व्यापार की जानकारी मिलती है।

⇒ चीनी पर्यटकों में प्रमुख हैं – फा-हियान और ह्वेन सांग दोनों बौद्ध थे और बौद्ध तीर्थों का दर्शन करने तथा बौद्ध धर्म का अध्ययन करने भारत आए थे।

⇒ फा-हियान ईसा की 5वीं सदी के प्रारंभ में आया था और ह्वेन सांग 7वीं सदी के इसी चतुर्थांश में।
फा-हियान ने गुप्तकालीन भारत की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है तो ह्वेन सांग ने इसी प्रश्न की जानकारी हर्षकालीन भारत के बारे में दी है।

ऐतिहासिक दृष्टि :—

⇒ प्राचीन भारतीयों पर आरोप लगाया गया है कि उनमें ऐतिहासिक दृष्टि का अभाव था। यह तो स्पष्ट है कि उन्होंने वैसा इतिहास नहीं लिखा जैसा आजकल लिखा जाता है, और न वैसा ही लिखा जैसा यूनानियों ने लिखा है। फिर भी, हमें पुराणों में एक प्रकार का इतिहास अवश्य मिलता है।

⇒ पुराणों की संख्या 18 है : 18 पारंपरिक पद हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से पुराण विश्वकोश जैसे हैं, पर इनमें गुप्तकाल के आरंभ तक का राजवंशी इतिहास लिखा है।

इनमें घटना के स्थलों का उल्लेख है और कभी-कभी घटना के कारणों और परिणामों का विवेचन भी किया गया है, परंतु यथार्थ में ये घटनाएँ विवरण लिखे जाने के काफी पहले हो चुकी थीं।

इन पुराणों के लेखक परिवर्तन की व्याख्या से अनभिज्ञ थे, जो इतिहास का सारतत्त्व होती हैं।

⇒ पुराणों में 4 युग बताए गए हैं —
कृत, त्रेता, द्वापर और कलि।
इनमें हर युग अपने पिछले युग से घटिया बताया गया है और कहा गया है कि एक युग के बाद दूसरा युग आरंभ होता है तब नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों का अधःपतन होता है।
काल और स्थान, जो इतिहास के महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं, उनका महत्त्व इसमें बताया गया है।

⇒ महाभारत के शांति पर्व में कहा गया है कि देश और काल के बदलने से अधर्म धर्म हो जाता है और धर्म अधर्म होता है।

⇒ कई प्रकार के संवत जिनके निर्देश के साथ घटनाएँ अभिलिखित होती थीं, प्राचीन भारत में ही शुरु हुए।

V.V.I. ⇒ विक्रम् संवत् का आरंभ 57-58 ई० पू० में हुआ, शक संवत् का 78 ई० में और गुप्त संवत् का 319 ई० में।